॥ श्रीहरिः ॥

प्रकाशकीय निवेदन

भारतीय संस्कृतिका कोई भी प्रेमी आज दुर्गार्तिनाशिनी शक्ति पराम्बा भगवती दुर्गा एवं उनकी उपासनाके लिये सर्वोत्तम और सर्वमान्य ग्रन्थरत्न दुर्गासप्तशतीसे अपरिचित नहीं है। यह एक आशीर्वादात्मक ग्रन्थरत्न है। आजतक न जाने कितने भक्त इस ग्रन्थके द्वारा भगवतीकी उपासना करके अपने मनोरथ सिद्ध कर चुके हैं। इस ग्रन्थके नित्यपाठसे जहाँ समस्त कामनाओंकी सिद्धि होती है, वहीं भगवतीकी कृपा और मुक्ति भी सहज ही प्राप्त की जा सकती है। इसलिये प्रत्येक श्रद्धालु चाहे वह किसी भी देश, वेष, मत, सम्प्रदायसे सम्बन्धित क्यों न हो—दुर्गासप्तशतीका आश्रय ग्रहण कर सकता है।

श्रद्धालु भक्तोंके कल्याणार्थ गीताप्रेससे इस दिव्य ग्रन्थके केवल मूल, हिन्दी अनुवाद-अजिल्द तथा सजिल्द अनेक संस्करण प्रकाशित किये गये हैं। इसी परम्परामें संस्कृतज्ञानसे अनभिज्ञ जनताकी सुविधाको ध्यानमें रखते हुए भगवतीकी कृपाके इस सुन्दर इतिहास (दुर्गासप्तशती) का मात्र हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है, श्रद्धालु भक्त इसे अपनाकर देवीकी कृपासे अपना अभीष्ट सिद्ध करेंगे।

—प्रकाशक

॥ श्रीदुर्गादेव्यै नमः ॥

विषय-सूची

विषय **पृष्ठ-संख्या**

१-सप्तश्लोकी दुर्गा १

२-श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र ४

३-पाठविधि ९

१-देवी-कवच २१

२-अर्गलास्तोत्र ३५

३-कीलक ४१

४-वेदोक्त रात्रिसूक्त ५०

५-तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त ५४

६-श्रीदेव्यथर्वशीर्ष ५७

७-नवार्णविधि ६९

८-सप्तशतीन्यास ७९

४-श्रीदुर्गासप्तशती .....

१-पहला अध्याय—मेधा ऋषिका राजा सुरथ और समाधिको भगवतीकी महिमा बताते हुए मधु-कैटभ-वधका प्रसङ्ग सुनाना ८६

२-**दूसरा अध्याय**—देवताओंके तेजसे देवीका प्रादुर्भाव और महिषासुरकी सेनाका वध १०५
३-**तीसरा अध्याय**—सेनापतियोंसहित महिषासुरका वध १२०
४-**चौथा अध्याय**—इन्द्रादि देवताओंद्वारा देवीकी स्तुति १२९
५-**पाँचवाँ अध्याय**—देवताओंद्वारा देवीकी स्तुति, चण्ड-मुण्डके मुखसे अम्बिकाके रूपकी प्रशंसा सुनकर शुम्भका उनके पास दूत भेजना और दूतका निराश लौटना १४२
६-**छठा अध्याय**—धूम्रलोचन-वध १५९
७-**सातवाँ अध्याय**—चण्ड और मुण्डका वध १६४
८-**आठवाँ अध्याय**—रक्तबीज-वध १७०
९-**नवाँ अध्याय**—निशुम्भ-वध १८३
१०-**दसवाँ अध्याय**—शुम्भ-वध १९१
११-**ग्यारहवाँ अध्याय**—देवताओंद्वारा देवीकी स्तुति तथा देवीद्वारा देवताओंको वरदान १९७
१२-**बारहवाँ अध्याय**—देवी-चरित्रोंके पाठका माहात्म्य २०९
१३-**तेरहवाँ अध्याय**—सुरथ और वैश्यको देवीका वरदान २१८

५-**उपसंहार** २२३
१-ऋग्वेदोक्त देवीसूक्त २३६
२-तन्त्रोक्त देवीसूक्त २४१
३-प्राधानिक रहस्य २४७
४-वैकृतिक रहस्य २५६
५-मूर्तिरहस्य २६९
६-**क्षमा-प्रार्थना** २७५
७-**श्रीदुर्गामानस-पूजा** २७७
८-**श्रीदुर्गाद्वात्रिंशत्-नाममाला** २८७
९-**देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र** २९२
१०-**सिद्धकुञ्जिकास्तोत्र** २९८
११-**सप्तशतीके कुछ सिद्ध सम्पुट-मन्त्र** ३०२
१२-**श्रीदेवीजीकी आरती** ३११
१३-**श्रीअम्बाजीकी आरती** ३१३
१४-**देवीमयी** ..... **कवर-पृष्ठ**

सप्तश्लोकी दुर्गा

शिवजी बोले—हे देवि! तुम भक्तोंके लिये सुलभ हो और समस्त कर्मोंका विधान करनेवाली हो। कलियुगमें कामनाओंकी सिद्धि-हेतु यदि कोई उपाय हो तो उसे अपनी वाणीद्वारा सम्यक्‌रूपसे व्यक्त करो।

देवीने कहा—हे देव! आपका मेरे ऊपर बहुत स्नेह है। कलियुगमें समस्त कामनाओंको सिद्ध करनेवाला जो साधन है वह बतलाऊँगी सुन! उसका नाम है 'अम्बास्तुति'।

ॐ इस दुर्गासप्तश्लोकी स्तोत्रमन्त्रके नारायण ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, श्रीमहाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती देवता हैं, श्रीदुर्गाकी प्रसन्नताके लिये सप्तश्लोकी दुर्गापाठमें इसका विनियोग किया जाता है।

वे भगवती महामाया देवी ज्ञानियोंके भी चित्तको बलपूर्वक खींचकर मोहमें डाल देती हैं॥ १॥

मा दुर्गे! आप स्मरण करनेपर सब प्राणियोंका भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषोंद्वारा चिन्तन करनेपर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुःख, दरिद्रता और भय हरनेवाली देवि! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करनेके लिये सदा ही दयार्द्र रहता हो॥ २॥

नारायणी! तुम सब प्रकारका मङ्गल प्रदान करनेवाली मङ्गलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थोंको सिद्ध करनेवाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रोंवाली एवं गौरी हो। तुम्हें नमस्कार है॥ ३॥

शरणमें आये हुए दीनों एवं पीड़ितोंकी रक्षामें संलग्न

रहनेवाली तथा सबकी पीड़ा दूर करनेवाली नारायणी देवि! तुम्हें नमस्कार है॥ ४॥

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकारकी शक्तियोंसे सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि! सब भयोंसे हमारी रक्षा करो; तुम्हें नमस्कार है॥ ५॥

देवि! तुम प्रसन्न होनेपर सब रोगोंको नष्ट कर देती हो और कुपित होनेपर मनोवाञ्छित सभी कामनाओंका नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरणमें जा चुके हैं, उनपर विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरणमें गये हुए मनुष्य दूसरोंको शरण देनेवाले हो जाते हैं॥ ६॥

सर्वेश्वरि! तुम इसी प्रकार तीनों लोकोंकी समस्त बाधाओंको शान्त करो और हमारे शत्रुओंका नाश करती रहो॥ ७॥

॥ श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्ण॥

ॐ

॥ श्रीदुर्गायै नमः॥

श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र

शङ्करजी पार्वतीजीसे कहते हैं—**कमलानने! अब मैं अष्टोत्तरशतनामका वर्णन करता हूँ, सुनो; जिसके प्रसाद -(पाठ या श्रवण-) मात्रसे परम साध्वी भगवती दुर्गा प्रसन्न हो जाती हैं॥ १॥**

१-ॐ सती, २-साध्वी, ३-भवप्रीता (भगवान् शिवपर प्रीति रखनेवाली), ४-भवानी, ५-भवमोचनी (संसारबन्धनसे मुक्त करनेवाली), ६-आर्या, ७-दुर्गा, ८-जया, ९-आद्या, १०-त्रिनेत्रा, ११-शूलधारिणी, १२-पिनाकधारिणी, १३-चित्रा, १४-चण्डघण्टा (प्रचण्ड स्वरसे घण्टानाद करनेवाली),

१५-महातपाः (भारी तपस्या करनेवाली), १६-मनः (मनन-शक्ति), १७-बुद्धिः (बोधशक्ति), १८-अहंकारा (अहंताका आश्रय), १९-चित्तरूपा, २०-चिता, २१-चितिः (चेतना), २२-सर्वमन्त्रमयी, २३-सत्ता (सत्-स्वरूपा), २४-सत्यानन्दस्वरूपिणी, २५-अनन्ता (जिनके स्वरूपका कहीं अन्त नहीं), २६-भाविनी (सबको उत्पन्न करनेवाली), २७-भाव्या (भावना एवं ध्यान करने योग्य), २८-भव्या (कल्याणरूपा), २९-अभव्या (जिससे बढ़कर भव्य कहीं है नहीं), ३०-सदागति, ३१-शाम्भवी (शिवप्रिया), ३२-देवमाता, ३३-चिन्ता, ३४-रत्नप्रिया, ३५-सर्वविद्या, ३६-दक्षकन्या, ३७-दक्षयज्ञविनाशिनी, ३८-अपर्णा (तपस्याके समय पत्तेको भी न खानेवाली), ३९-अनेकवर्णा (अनेक रंगोंवाली), ४०-पाटला (लाल रंगवाली), ४१-पाटलावती (गुलाबके फूल या

लाल फूल धारण करनेवाली), ४२-पट्टाम्बरपरीधाना (रेशमी वस्त्र पहननेवाली), ४३-कलमञ्जीररञ्जिनी (मधुर ध्वनि करनेवाले मञ्जीरको धारण करके प्रसन्न रहनेवाली), ४४-अमेयविक्रमा (असीम पराक्रमवाली), ४५-क्रूरा (दैत्योंके प्रति कठोर), ४६-सुन्दरी, ४७-सुरसुन्दरी, ४८-वनदुर्गा, ४९-मातङ्गी, ५०-मतङ्गमुनिपूजिता, ५१-ब्राह्मी, ५२-माहेश्वरी, ५३-ऐन्द्री, ५४-कौमारी, ५५-वैष्णवी, ५६-चामुण्डा, ५७-वाराही, ५८-लक्ष्मी, ५९-पुरुषाकृति, ६०-विमला, ६१-उत्कर्षिणी, ६२-ज्ञाना, ६३-क्रिया, ६४-नित्या, ६५-बुद्धिदा, ६६-बहुला, ६७-बहुलप्रेमा, ६८-सर्ववाहनवाहना, ६९-निशुम्भशुम्भहननी, ७०-महिषासुरमर्दिनी, ७१-मधुकैटभहन्त्री, ७२-चण्डमुण्डविनाशिनी, ७३-सर्वासुरविनाशा, ७४-सर्वदानवघातिनी, ७५-सर्वशास्त्रमयी, ७६-सत्या, ७७-सर्वास्त्रधारिणी,

७८-अनेकशस्त्रहस्ता, ७९-अनेकास्त्रधारिणी, ८०-कुमारी, ८१-एककन्या, ८२-कैशोरी, ८३-युवती, ८४-यति, ८५-अप्रौढा, ८६-प्रौढा, ८७-वृद्धमाता, ८८-बलप्रदा, ८९-महोदरी, ९०-मुक्तकेशी, ९१-घोररूपा, ९२-महाबला, ९३-अग्निज्वाला, ९४-रौद्रमुखी, ९५-कालरात्रि, ९६-तपस्विनी, ९७-नारायणी, ९८-भद्रकाली, ९९-विष्णुमाया, १००-जलोदरी, १०१-शिवदूती, १०२-कराली, १०३-अनन्ता (विनाशरहिता), १०४-परमेश्वरी, १०५-कात्यायनी, १०६-सावित्री, १०७-प्रत्यक्षा, १०८-ब्रह्मवादिनी ॥ २—१५ ॥

देवी पार्वती! जो प्रतिदिन दुर्गाजीके इस अष्टोत्तरशतनामका पाठ करता है, उसके लिये तीनों लोकोंमें कुछ भी असाध्य नहीं है ॥ १६ ॥ वह धन, धान्य, पुत्र, स्त्री, घोड़ा, हाथी, धर्म आदि चार पुरुषार्थ तथा अन्तमें सनातन मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है ॥ १७ ॥ कुमारीका पूजन

और देवी सुरेश्वरीका ध्यान करके पराभक्तिके साथ उनका पूजन करे, फिर अष्टोत्तरशत नामका पाठ आरम्भ करे ॥ १८ ॥ देवि! जो ऐसा करता है, उसे सब श्रेष्ठ देवताओंसे भी सिद्धि प्राप्त होती है। राजा उसके दास हो जाते हैं। वह राज्यलक्ष्मीको प्राप्त कर लेता है ॥ १९ ॥ गोरोचन, लाक्षा, कुङ्कुम, सिन्दूर, कपूर, घी (अथवा दूध), चीनी और मधु—इन वस्तुओंको एकत्र करके इनसे विधिपूर्वक यन्त्र लिखकर जो विधिज्ञ पुरुष सदा उस यन्त्रको धारण करता है, वह शिवके तुल्य (मोक्षरूप) हो जाता है ॥ २० ॥ भौमवती अमावास्याकी आधी रातमें, जब चन्द्रमा शतभिषा नक्षत्रपर हों, उस समय इस स्तोत्रको लिखकर जो इसका पाठ करता है, वह सम्पत्तिशाली होता है ॥ २१ ॥

॥ श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र सम्पूर्ण ॥

पाठविधि*

साधक स्नान करके पवित्र हो आसन-शुद्धिकी क्रिया सम्पन्न करके शुद्ध आसनपर बैठे; साथमें शुद्ध जल, पूजनसामग्री और श्रीदुर्गासप्तशतीकी पुस्तक रखे। पुस्तकको अपने सामने काष्ठ आदिके शुद्ध आसनपर विराजमान कर दे। ललाटमें अपनी रुचिके

* यह विधि यहाँ संक्षिप्त रूपसे दी जाती है। नवरात्र आदि विशेष अवसरोंपर तथा शतचण्डी आदि अनुष्ठानोंमें विस्तृत विधिका उपयोग किया जाता है। उसमें यन्त्रस्थ कलश, गणेश, नवग्रह, मातृका, वास्तु, सप्तर्षि, सप्तचिरंजीव, ६४ योगिनी, ५० क्षेत्रपाल तथा अन्यान्य देवताओंकी वैदिक विधिसे पूजा होती है। अखण्ड दीपकी व्यवस्था की जाती है। देवीप्रतिमाकी अङ्गन्यास और अग्न्युत्तारण आदि विधिके साथ विधिवत् पूजा की जाती है। नवदुर्गापूजा, ज्योतिःपूजा, वटुक-गणेशादिसहित कुमारीपूजा, अभिषेक, नान्दीश्राद्ध, रक्षाबन्धन, पुण्याहवाचन, मङ्गलपाठ, गुरुपूजा, तीर्थावाहन, मन्त्रस्नान आदि, आसनशुद्धि, प्राणायाम, भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृकान्यास, बहिर्मातृकान्यास, सृष्टिन्यास, स्थितिन्यास, शक्तिकलान्यास, शिवकलान्यास, हृदयादिन्यास, षोढान्यास, विलोमन्यास, तत्त्वन्यास, अक्षरन्यास, व्यापकन्यास, ध्यान,

अनुसार भस्म, चन्दन अथवा रोरी लगा ले, शिखा बाँध ले; फिर पूर्वाभिमुख होकर तत्त्व-शुद्धिके लिये चार बार आचमन करे। उस समय अग्राङ्कित चार मन्त्रोंको क्रमशः पढ़े—

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनोंको प्रणाम करे; फिर 'पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ' **इत्यादि मन्त्रसे**

पीठपूजा, विशेषार्घ्य, क्षेत्रकीलन, मन्त्रपूजा, विविध मुद्राविधि, आवरणपूजा एवं प्रधानपूजा आदिका शास्त्रीय पद्धतिके अनुसार अनुष्ठान होता है। इस प्रकार विस्तृत विधिसे पूजा करनेकी इच्छावाले भक्तोंको अन्यान्य पूजा-पद्धतियोंकी सहायतासे भगवतीकी आराधना करके पाठ आरम्भ करना चाहिये।

कुशकी पवित्री धारण करके हाथमें लाल फूल, अक्षत और जल लेकर निम्नाङ्कितरूपसे संकल्प करे—

पहले तीन बार कहे—ॐ विष्णुः, विष्णुः, विष्णुः। तदनन्तर 'ॐ नमः परमात्मने' कहकर इस प्रकार बोले—श्रीपुराण पुरुषोत्तम श्रीविष्णुकी आज्ञासे आज प्रवर्त्तमान श्रीब्रह्माके द्वितीय परार्द्धमें श्रीश्वेतवाराह कल्पमें वैवस्वत मन्वन्तरके अट्ठाईसवें कलियुगके प्रथम चरणमें, जम्बूद्वीपके अन्तर्गत भारतवर्षके भरतखण्डमें, आर्यावर्तके अन्तर्गत ब्रह्मावर्तके पुण्यप्रद एक देशमें, वौद्धावतारमें.....संवत्सर तथा.....अयन और महामाङ्गल्यप्रद मासोंमें उत्तम.....मासके.....पक्षके.....दिनसे युक्त.....तिथिमें तथा.....नक्षत्रमें.....राशिमें स्थित सूर्यके और.....राशियोंमें स्थित चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिके रहनेपर शुभयोगमें, शुभकरणमें

इस प्रकारके विशेष गुणोंसे विशिष्ट.....शुभ पुण्य तिथिमें समस्त शास्त्रों, श्रुतियों, स्मृतियों एवं पुराणोंमें कहे गये फलकी प्राप्तिका अभिलाषी.....गोत्रमें उत्पन्न.....शर्मा (वर्मा, गुप्त) मैं-पुत्र-स्त्रीबान्धवसहित मेरे श्रीनवदुर्गाके अनुग्रहसे ग्रहकृत, राजकृत सर्वविध पीडाओंके निवृत्तिपूर्वक नैरुज्य-दीर्घायु-पुष्टि-धन एवं धान्यकी समृद्धिके लिये श्रीनवदुर्गाके प्रसादसे समस्त आपत्तियोंकी निवृत्ति एवं समस्त अभीष्ट फलकी प्राप्ति तथा धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष—इन चतुर्विध पुरुषार्थोंकी सिद्धिद्वारा श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी एवं महासरस्वती देवताकी प्रीतिके लिये शापोद्धारपूर्वक कवच, अर्गला, कीलकका पाठ तथा वेदतन्त्र, उक्त रात्रिसूक्तपाठ, देव्यथर्वशीर्षपाठ और न्यासविधिसहित नवार्णजप तथा सप्तशती-न्यास-ध्यानसहित चरित्रसम्बन्धी विनियोग एवं न्यास और ध्यानपूर्वक मार्कण्डेयजी बोले—'सावर्णि नामक मनु होंगे, यहाँतक

दुर्गासप्तशतीका पाठ, इसके बाद न्यासविधिके साथ नवार्णजप, वेदतन्त्रोक्त देवीसूक्तका पाठ, रहस्यत्रयका पाठ, शापोद्धार आदि करूँगा (करूँगी)।

इस प्रकार प्रतिज्ञा (संकल्प) करके देवीका ध्यान करते हुए पञ्चोपचारकी विधिसे पुस्तककी पूजा[1] करे, योनिमुद्राका प्रदर्शन करके भगवतीको प्रणाम करे, फिर मूल नवार्णमन्त्रसे पीठ आदिमें आधारशक्तिकी स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तकको विराजमान करे।[2] इसके बाद शापोद्धार[3] करना

१-देवीको नमस्कार है, महादेवी शिवाको सर्वदा नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्राको प्रणाम है। हमलोग नियमपूर्वक जगदम्बाको नमस्कार करते हैं।

२-दुर्गादेवीका ध्यान करके उनका पञ्चोपचार पूजा करे, तदनन्तर योनिमुद्राद्वारा प्रणाम करके पुस्तकके आसन लगाकर मूल मन्त्रसे उसपर पुस्तककी स्थापना करनी चाहिये।

३-'सप्तशती-सर्वस्व' के उपासना-क्रममें पहले शापोद्धार करके बादमें षडङ्गसहित पाठ करनेका

चाहिये। इसके अनेक प्रकार हैं। 'ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा'**—इस मन्त्रका आदि**

निर्णय किया गया है, अतः कवच आदि पाठके पहले ही शापोद्धार कर लेना चाहिये। कात्यायनी-तन्त्रमें शापोद्धार तथा उत्कीलनका और ही प्रकार बतलाया गया है—'अन्त्याद्यार्कद्विरुद्रत्रिदिगब्ध्यङ्केष्विभर्तवः। अश्वोऽश्च इति सर्गाणां शापोद्धारे मनोः क्रमः॥' 'उत्कीलने चरित्राणां मध्याद्यन्तमिति क्रमः।' अर्थात् सप्तशतीके अध्यायोंका तेरह—एक, बारह—दो, ग्यारह—तीन, दस—चार, नौ—पाँच तथा आठ—छः के क्रमसे पाठ करके अन्तमें सातवें अध्यायको दो बार पढ़े। यह शापोद्धार है और पहले मध्यम चरित्रका, फिर प्रथम चरित्रका, तत्पश्चात् उत्तर चरित्रका पाठ करना उत्कीलन है। कुछ लोगोंके मतमें कीलकमें बताये-अनुसार 'ददाति प्रतिगृह्णाति' के नियमसे कृष्णपक्षकी अष्टमी या चतुर्दशी तिथिमें देवीको सर्वस्व-समर्पण करके उन्हींका होकर उनके प्रसादरूपसे प्रत्येक वस्तुको उपयोगमें लाना ही शापोद्धार और उत्कीलन है। कोई कहते हैं—छः अङ्गोंसहित पाठ करना ही शापोद्धार है। अङ्गोंका त्याग ही शाप है। कुछ विद्वानोंकी रायमें शापोद्धार कर्म अनिवार्य नहीं है, क्योंकि रहस्याध्यायमें यह स्पष्टरूपसे कहा है कि जिसे एक ही दिनमें पूरे पाठका अवसर न मिले, वह एक दिन केवल मध्यम चरित्रका, दूसरे दिन शेष दो चरित्रोंका पाठ करे। इसके सिवा, जो प्रतिदिन नियमपूर्वक पाठ करते हैं, उनके लिये एक दिनमें एक पाठ न हो सकनेपर एक, दो, एक, चार, दो, एक और दो अध्यायोंके क्रमसे सात दिनोंमें पाठ पूरा करनेका आदेश दिया गया है। ऐसी दशामें प्रतिदिन शापोद्धार और कीलक कैसे सम्भव है। अस्तु, जो हो, हमने यहाँ जिज्ञासुओंके लाभार्थ शापोद्धार और उत्कीलन दोनोंके विधान दे दिये हैं।

और अन्तमें सात बार जप करे। यह शापोद्धार मन्त्र कहलाता है। इसके अनन्तर उत्कीलन मन्त्रका जप किया जाता है। इसका जप आदि और अन्तमें इक्कीस-इक्कीस बार होता है। यह मन्त्र इस प्रकार है—'ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।' **इसके जपके पश्चात् आदि और अन्तमें सात-सात बार मृतसंजीवनी विद्याका जप करना चाहिये, जो इस प्रकार है—**'ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।' **मारीचकल्पके अनुसार सप्तशती-शापविमोचनका मन्त्र यह है—**'ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।' **इस मन्त्रका आरम्भमें ही एक सौ आठ बार जप करना चाहिये, पाठके अन्तमें नहीं। अथवा रुद्रयामल महातन्त्रके**

अन्तर्गत दुर्गाकल्पमें कहे हुए चण्डिका-शाप-विमोचन मन्त्रोंका आरम्भमें ही पाठ करना चाहिये। वे मन्त्र इस प्रकार हैं—

'ॐ' इस श्रीचण्डिकाके ब्रह्मा, वसिष्ठ, विश्वामित्र-सम्बन्धी शाप-विमोचन मन्त्रके वसिष्ठ तथा नारद संवादात्मक सामवेदके अधिपति ब्रह्मा ऋषि हैं, सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता हैं। दुर्गाके तीनों चरित्र बीज हैं 'ह्रीं' शक्ति है, त्रिगुणात्मस्वरूपिणी चण्डिकाकी शापविमुक्तिमें अपने किये हुए संकल्पित कार्यकी सिद्धिके लिये जपमें इसका विनियोग किया जाता है।

ॐ (ह्रीं) रीं रेतःस्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १॥ ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ २॥ ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्

विमुक्ता भव॥ ३॥ ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ४॥ ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ५॥ ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ६॥ ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ७॥ ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ८॥ ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ९॥ ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १०॥ ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ११॥ ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता

भव॥ १२॥ ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १३॥ ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १४॥ ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १५॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १६॥ ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १७॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः॥ १८॥

हे परमेश्वर! इस प्रकार इन महामन्त्रोंको पढ़कर चण्डीके पाठको रात-दिन संशयरहित होकर करना चाहिये॥ १९॥

जो इस मन्त्रको न जान करके—इन मन्त्रोंका पाठ न

करके चण्डीका पाठ करता है, वह अपनी भी हानि करता है और दाता—पाठ करवानेवालेकी भी हानि करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं॥ २०॥

इस प्रकार शापोद्धार करनेके अनन्तर अन्तर्मातृका-बहिर्मातृका आदि न्यास करे, फिर श्रीदेवीका ध्यान करके रहस्यमें बताये-अनुसार नौ कोष्ठोंवाले यन्त्रमें महालक्ष्मी आदिका पूजन करे, इसके बाद छः अङ्गोंसहित दुर्गासप्तशतीका पाठ आरम्भ किया जाता है। कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य—ये ही सप्तशतीके छः अङ्ग माने गये हैं। इनके क्रममें भी मतभेद है। चिदम्बरसंहितामें पहले अर्गला फिर कीलक तथा अन्तमें कवच पढ़नेका विधान है। किंतु योगरत्नावलीमें पाठका क्रम इससे भिन्न है। उसमें कवचको बीज, अर्गलाको

शक्ति तथा कीलकको कीलक संज्ञा दी गयी है। जिस प्रकार सब मन्त्रोंमें पहले बीजका, फिर शक्तिका तथा अन्तमें कीलकका उच्चारण होता है, उसी प्रकार यहाँ भी पहले कवचरूप बीजका, फिर अर्गलारूपा शक्तिका तथा अन्तमें कीलकरूप कीलकका क्रमशः पाठ होना चाहिये।* यहाँ इसी क्रमका अनुसरण किया गया है।

* महामन्त्रमय सप्तशतीके कवचको बीज, अर्गलाको शक्ति और कीलकको कीलक कहा गया है।

इस प्रकार अनेक तन्त्रोंके अनुसार सप्तशतीके पाठका क्रम अनेक प्रकारका उपलब्ध होता है। ऐसी दशामें अपने देशमें पाठका जो क्रम पूर्वपरम्परासे प्रचलित हो, उसीका अनुसरण करना अच्छा है।

अथ देवी-कवच

ॐ इस श्रीचण्डीकवचके ब्रह्मा ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासमें कही गयी माताएँ बीज, दिग्बन्ध देवता तत्त्व हैं, श्रीजगदम्बाकी प्रीतिके लिये सप्तशतीके पाठाङ्गभूत जपमें इसका विनियोग किया जाता है।

ॐ चण्डिकादेवीको नमस्कार है।

मार्कण्डेयजीने कहा—**पितामह! जो इस संसारमें परम गोपनीय तथा मनुष्योंकी सब प्रकारसे रक्षा करनेवाला है और जो अबतक आपने दूसरे किसीके सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये॥ १॥**

ब्रह्माजी बोले—**ब्रह्मन्! ऐसा साधन तो एक देवीका कवच**

ही है, जो गोपनीयसे भी परम गोपनीय, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियोंका उपकार करनेवाला है। महामुने! उसे श्रवण करो॥ २॥ देवीकी नौ मूर्तियाँ हैं, जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। उनके पृथक्-पृथक् नाम बतलाये जाते हैं। प्रथम नाम शैलपुत्री[१] है। दूसरी मूर्तिका नाम ब्रह्मचारिणी[२] है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा[३] के नामसे प्रसिद्ध है। चौथी मूर्तिको कूष्माण्डा[४] कहते हैं। पाँचवीं दुर्गाका नाम स्कन्दमाता[५] है। देवीके छठे रूपको कात्यायनी[६] कहते हैं।

१-गिरिराज हिमालयकी पुत्री 'पार्वतीदेवी'। यद्यपि ये सबकी अधीश्वरी हैं, तथापि हिमालयकी तपस्या और प्रार्थनासे प्रसन्न हो कृपापूर्वक उनकी पुत्रीके रूपमें प्रकट हुईं। यह बात पुराणोंमें प्रसिद्ध है। २-सच्चिदानन्दमय ब्रह्मस्वरूपकी प्राप्ति कराना जिनका स्वभाव हो, वे 'ब्रह्मचारिणी' हैं। ३-आह्लादकारी चन्द्रमा जिनकी घण्टामें स्थित हों, उन देवीका नाम 'चन्द्रघण्टा' है। ४-त्रिविधतापयुक्त संसार जिनके उदरमें स्थित है, वे भगवती 'कूष्माण्डा' कहलाती हैं। ५-छान्दोग्यश्रुतिके अनुसार भगवतीकी शक्तिसे उत्पन्न हुए सनत्कुमारका नाम स्कन्द है। उनकी माता होनेसे वे 'स्कन्दमाता' कहलाती हैं। ६-देवताओंका कार्य सिद्ध करनेके लिये

सातवाँ कालरात्रि[७] और आठवाँ स्वरूप महागौरी[८] के नामसे प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गाका नाम सिद्धिदात्री[९] है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेदभगवान्‌के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं॥ ३—५॥ जो मनुष्य अग्निमें जल रहा हो, रणभूमिमें शत्रुओंसे घिर गया हो, विषम संकटमें फँस गया हो तथा इस प्रकार भयसे आतुर होकर जो भगवती दुर्गाकी शरणमें प्राप्त हुए हों, उनका कभी कोई अमङ्गल नहीं होता। युद्धके समय संकटमें पड़नेपर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती। उन्हें शोक, दुःख और भयकी प्राप्ति नहीं होती॥ ६-७॥

देवी महर्षि कात्यायनके आश्रमपर प्रकट हुईं और महर्षिने उन्हें अपनी कन्या माना; इसलिये 'कात्यायनी' नामसे उनकी प्रसिद्धि हुई। ७-सबको मारनेवाले कालकी भी रात्रि (विनाशिका) होनेसे उनका नाम 'कालरात्रि' है। ८-इन्होंने तपस्याद्वारा महान् गौरवर्ण प्राप्त किया था, अतः ये महागौरी कहलायीं। ९-सिद्धि अर्थात् मोक्षको देनेवाली होनेसे उनका नाम 'सिद्धिदात्री' है।

जिन्होंने भक्तिपूर्वक देवीका स्मरण किया है, उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। देवेश्वरि! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसन्देह रक्षा करती हो॥ ८॥ चामुण्डादेवी प्रेतपर आरूढ़ होती हैं। वाराही भैंसेपर सवारी करती हैं। ऐन्द्रीका वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवीदेवी गरुडपर ही आसन जमाती हैं॥ ९॥ माहेश्वरी वृषभपर आरूढ़ होती हैं। कौमारीका वाहन मयूर है। भगवान् विष्णुकी प्रियतमा लक्ष्मीदेवी कमलके आसनपर विराजमान हैं और हाथोंमें कमल धारण किये हुए हैं॥ १०॥ वृषभपर आरूढ़ ईश्वरीदेवीने श्वेत रूप धारण कर रखा है। ब्राह्मीदेवी हंसपर बैठी हुई हैं और सब प्रकारके आभूषणोंसे विभूषित हैं॥ ११॥ इस प्रकार ये सभी माताएँ सब प्रकारकी योगशक्तियोंसे सम्पन्न हैं। इनके सिवा और भी बहुत-सी-देवियाँ हैं, जो अनेक प्रकारके आभूषणोंकी

शोभासे युक्त तथा नाना प्रकारके रत्नोंसे सुशोभित हैं॥ १२॥

ये सम्पूर्ण देवियाँ क्रोधमें भरी हुई हैं और भक्तोंकी रक्षाके लिये रथपर बैठी दिखायी देती हैं। ये शङ्ख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मुसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शार्ङ्गधनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथोंमें धारण करती हैं। दैत्योंके शरीरका नाश करना, भक्तोंको अभयदान देना और देवताओंका कल्याण करना—यही उनके शस्त्र-धारणका उद्देश्य है॥ १३—१५॥ [कवच आरम्भ करनेके पहले इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये—] महान् रौद्ररूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान् बल और महान् उत्साहवाली देवि! तुम महान् भयका नाश करनेवाली हो, तुम्हें नमस्कार है॥ १६॥ तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओंका भय बढ़ानेवाली जगदम्बिके! मेरी रक्षा करो। पूर्व

दिशामें ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति) मेरी रक्षा करे। अग्निकोणमें अग्निशक्ति, दक्षिण दिशामें वाराही तथा नैर्ऋत्यकोणमें खड्गधारिणी मेरी रक्षा करे। पश्चिम दिशामें वारुणी और वायव्यकोणमें मृगपर सवारी करनेवाली देवी मेरी रक्षा करे॥ १७-१८॥

उत्तर दिशामें कौमारी और ईशानकोणमें शूलधारिणीदेवी रक्षा करे। ब्रह्माणि! तुम ऊपरकी ओरसे मेरी रक्षा करो और वैष्णवीदेवी नीचेकी ओरसे मेरी रक्षा करे॥ १९॥ इसी प्रकार शवको अपना वाहन बनानेवाली चामुण्डादेवी दसों दिशाओंमें मेरी रक्षा करे। जया आगेसे और विजया पीछेकी ओरसे मेरी रक्षा करे॥ २०॥ वामभागमें अजिता और दक्षिणभागमें अपराजिता रक्षा करे। उद्योतिनी शिखाकी रक्षा करे। उमा मेरे मस्तकपर विराजमान होकर रक्षा करे॥ २१॥ ललाटमें मालाधरी रक्षा करे और यशस्विनीदेवी

मेरी भौंहोंका संरक्षण करे। भौंहोंके मध्यभागमें त्रिनेत्रा और नथुनोंकी यमघण्टादेवी रक्षा करे॥ २२॥ दोनों नेत्रोंके मध्यभागमें शङ्खिनी और कानोंमें द्वारवासिनी रक्षा करे। कालिकादेवी कपोलोंकी तथा भगवती शांकरी कानोंके मूलभागकी रक्षा करे॥ २३॥ नासिकामें सुगन्धा और ऊपरके ओठमें चर्चिकादेवी रक्षा करे। नीचेके ओठमें अमृतकला तथा जिह्वामें सरस्वतीदेवी रक्षा करे॥ २४॥

कौमारी दाँतोंकी और चण्डिका कण्ठप्रदेशकी रक्षा करे। चित्रघण्टा गलेकी घाँटीकी और महामाया तालुमें रहकर रक्षा करे॥ २५॥ कामाक्षी ठोढ़ीकी और सर्वमङ्गला मेरी वाणीकी रक्षा करे। भद्रकाली ग्रीवामें और धनुर्धरी पृष्ठवंश-(मेरुदण्ड-) में रहकर रक्षा करे॥ २६॥ कण्ठके बाहरी भागमें नीलग्रीवा और कण्ठकी नलीमें नलकूबरी रक्षा करे। दोनों कंधोंमें खड्गिनी और

मेरी दोनों भुजाओंकी वज्रधारिणी रक्षा करे॥ २७॥ दोनों हाथोंमें दण्डिनी और अंगुलियोंमें अम्बिका रक्षा करे। शूलेश्वरी नखोंकी रक्षा करे। कुलेश्वरी कुक्षि-(पेट-) में रहकर रक्षा करे॥ २८॥

महादेवी दोनों स्तनोंकी और शोकविनाशिनीदेवी मनकी रक्षा करे। ललितादेवी हृदयमें और शूलधारिणी उदरमें रहकर रक्षा करे॥ २९॥ नाभिमें कामिनी और गुह्यभागकी गुह्येश्वरी रक्षा करे। पूतना और कामिका लिङ्गकी और महिषवाहिनी गुदाकी रक्षा करे॥ ३०॥

भगवती कटिभागमें और विन्ध्यवासिनी घुटनोंकी रक्षा करे। सम्पूर्ण कामनाओंको देनेवाली महाबला देवी दोनों पिण्डलियोंकी रक्षा करे॥ ३१॥ नारसिंही दोनों घुट्टियोंकी और तैजसीदेवी दोनों चरणोंके पृष्ठभागकी रक्षा करे। श्रीदेवी पैरोंकी अङ्गुलियोंमें और तलवासिनी पैरोंके तलुओंमें रहकर रक्षा करे॥ ३२॥ अपनी दाढ़ोंके

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below